

संग्रह



दीकानेर, (राजपुर)

अज अद्वैत अखण्ड अनूरा—इसर के विशेषण ।

अपना दूर से सूझता है—समय पड़ते ही अपना याद आता है ।

अपनी करनी पार उतरनी—अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है ।

जैसा काम किया उमहा वैसा फल पाया ।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता—अकेला मनुष्य कुछ नहीं कर सकता ।

असरफ़ी लुटें कोयलों पर मुहर—बड़ी चीजें सुट छोटो रखाई जाव ।

अपने स्वार्थ को गधा चराते—स्वार्थो बचित अनुचित सब कर बैठता है ।

अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दिखाई देता है—स्पष्ट ।

औसर चूकी डोमनी गाये ताल येताल—समय चूकने पर उरफणग

करने से क्या लाभ ?

अरहर की टट्टी गुचराती ताला—छोटी बात के लिये बड़ा मामान ।

अपनी नींद मोना अपनी नींद उठता—निद्वन्द रहना ।

अपनी नारु कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगडे—दुष्ट लोग

दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये अपनी हानि की परवाह नहीं करते ।

अति का भला न घरसना अति की भली न धुप

अति का भला न खोलना अति की भली न चुप } अति का

कोई काम अच्छा नहीं ।

अपने घर में कुत्ता भी सिँह हो जाता है—घर पर सबको बल आता है ।

अर्क तरुन की डारन कई गज धाँधे जाहि—छोटे आदमी का

काम नहीं कर सकते ।

अपनी २ टापुली अपना २ राग—मिल कर काम न करना ।

अमरीनी धारर कौन आया है—नव नाशक है ।

अपनी तरुनी का नाम नहीं है ।

अनमांगे मोती मिलें मांगे मिले न भीख—गुणवान् को बिना मांगे ही सब कुछ मिल जाता है ।

अमानत में सथानत—धरोहर में वेईमानी करना ।

अपना दाम छोटा तो परखने वाले को क्या दोष ?

यदि अपने में चुराई न होती तो दूसरा क्यों चुरा कहता ।

अयाना जाने होया सथाना जाने किया—बच्चा प्यार को और समझदार आदमी काम को पहचानता है ।

अस्सी की आमद चौरासी का खर्च—आमदनी से खर्च अधिक है ।

अभी तो बेटो बाप की है—अब भी कुछ हो सकता है ।

अधजल गगरी छलकत जाय—थोड़ा आदमी इतराकर चलता है ।

आप काज महा काज—अपना काम अपने हाथ से अच्छा होता है ।

आग का जला आग से ही अच्छा होता है—जैसे का इलाज तैसा ।

आगे नाथ न पीछे पना—आगे पीछे कोई नहीं है ।

आधी छोड एक को भावे

ऐसा डूबे थाह न पावे

} लालची मारा जाता है ।

आग लगा कर पानी को दौडना—लडाई करा कर मेरा का उपयोग करना ।

आप न जावे सासुरे औरन को सिख देय—आप न करे शोर औरों को सिखावे ।

आई यह आया काम गई बहू गया काम—आदमी के साथ काम घटता बढ़ता है ।

आधी के आम हैं—थोडे दिन का खाम है (इत्तिकाकिया) ।

आहार व्योहार में लजा कैसी—शरम से काम बिगड जाता है ।

आग फूस में घेर—विरुध स्वभाव वारों की बन ही नहीं सकती ।

आदमी मान के लिये पहाड उठाता है—प्रतिष्ठा के लिये शक्ति से बाहर काम करता है ।

आप मरे जात परलय—अपना स्वार्थ सत्रसे पहिले देया जाता है ।

आंनों के अन्वे नाम नैनसुप्त—गुण के विरुध नाम ।

आलमान का थूका मुह पर आता है—दुस्ताहस के काम से अपनी बुराई होती है ।

आप डूबा तो जग डूबा—अपनी ही हानि हो तो दूसरों की हानि का क्या विचार करे ।

आधरी घोड़ी फोफले चना मूर्ख गुण की पहिचान नहीं कर सकता ।

आगे दौड़ पीछे चौड़—पिछला काम बिगड़ता जाय और आगे नया शुरू करते जाय ।

आदमी का आदमी ही शैतान है—आदमी ही आदमी को बिगाड़ देता है ।

आती बहू जनमता पूत सबको अच्छा लगता है—कायदा सबको खन्धा मारूम पडता है ।

आग लगते भोपडा जो निकले सो लाभ—जुकतान होते २ जो फुड़ उच रहे, कायदा ही है ।

आम के आम गुठलियों के दाम—किसी वस्तु से दोहरा लाभ ।

आम खाने ि पेड गिनने—मतलब से काम ।

इत तितों में तेल नहीं—जो आशा करते हो पूरी न हागी ।

इस हाथ दे उस हाथ ले—भरखे पुरे काम का फल तुरन्त मिलता है ।

ईंट का घर मिट्टी कर दिया—बना बनाया काम बिगाड़ दिया ।

ईद के चाद हो गये हो—तुम्हारे दर्शन मी नहीं हाते ।

ईश्वर की कृपा से सत्रजी कृपा है—एक ईश्वर की कृपा चादिरे ।

ईश्वर देया नहीं तो बुद्धि से तो जाना जाता है—सोचकर काम करना चाडिये ।

उगली पकड कर पहुँचा पकडना—थोडा सा सहारा मिलने पर गिर पटना ।

उल्लू की डुम फागता—बे जोड काम ।

उधार का खाना, फूस का तापना—उधार खाना फूस के तापने की तरह पीछे हु लदाई होता है ।

उत्तम खेती मध्यम बज । निकट चाकरी भीस निदान ।

पुराने लोगों ने खेती को अच्छा, तिजारत को बीचका, नौकरी नीच काम और भीष को बहुत ही बुरा बताया है ।

उसकी तूती बोल रही है---वसकी अच्छी चलती है ।

उलटा चोर कोतवाल को डांडे---दोषी निर्दोष पर दोष मढे ।

उद्योगिन पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी---पुरुषार्थी पुरुषों को लक्ष्मी स्वतः प्राप्त हो जाती है ।

उठी पैठ आठवें दिन लगती है-मौके को हाथ मे न जाने दो ।

उघरे अन्त न होय निवाह, कालनेमि जिमि रावण राह ।

कपट का काम आखिर पुन ही जाता है ।

ऊट के मुह में जीरा---बड़े पैरू को थोड़ी सी चीज से क्या होता है ।

ऊधौ का लैन न माधौ का दैन---कोई बखेडा नहीं ।

ऊची दूकान फीका पकवान---नाम बहुत करतब थोडा ।

ऊत्रौ तुम्हें द्वारका जाना---आखिर तुम्हें ऐसा करना है ।

ऊँट का मुह जाने क्रिधर उठे---उदर आदमी न जाने क्या कर उठे ।

ऊँट किस फरबट बैठे---क्या फैसला हो ।

ऊट की चोगी निहुरे २---बड़े काम छिप कर नहा होते ।

ऊट के गले चिल्ली---वे जोट मेल ।

ऊट बिलारि ले गई तत्र हांजी २ फरना---ठकुर सुहासी कहना ।

एक नारी सदा ब्रह्मचारी पुरुषा को एक स्त्रीव्रत होना चाहिये ।

एक नियान में दो तलवार नहीं समाती---एक की जगह दो का अधिकार नहीं हो सकता ।

एक और एक ग्यारह होते हैं---एक के साथ दूसरा हो जाने से बहुत महायता मिलती है ।सद्म में रही शक्ति है ।

एका मछली तमाम पानी को शदला कर देती है---बुरा सबको बिगाड देता है ।

एक पथ दो काज-किसी एक काम के करने में दो काम होना ।

एक तो गिलोय ऊडुनी दूसरे नीम चढ़ी-उदर को सहारा मिलगया ।

एक तो की रोटी, क्या मोटी क्या छोटी-वह बिल्कुल एक से है।

एक अनार सौ बीमार-एक चीज के सैकड़ों इच्छुक।

एक से दो भले मार्ग में साथ शब्द।

एक थैली के वट्टे हैं
एक बेलि के तूमरा } सब, पगवर हैं।

श्रोत्र की प्रीति बालू की भीति- श्रोत्र की प्रीति बालू की दीवार की तरह ठहर नहीं सकती।

ओस के घाटे प्यास नहीं बुझती थोड़ी चीज से क्या पूरा पड़ता है।

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर-जब किसी काम को करना ही चाहो तो कठिनाइयों से डर कैसा ?

अन्धों में काना राजा मूखों में थोड़ा जानने वाला ही चतुर कहाता है।

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा जहा राजा प्रजा में कुछ न्याय नहीं।

अन्धी पीसे कुत्ते खाए कोई देखने भालने वाला नहीं।

अन्धा क्या चाहे दो आंख-स्वार्थ अपना स्वार्थ चाहता है।

अन्धे के हाथ बटेर अयोग्य को बड़ी चीज मिलना।

अन्धा बाटे रेण्डी फिर फिर अपनों ही को दे-अपनों के साथ विशेष रियायत करना, अन्याय का वर्तव करना।

अन्ते मता सो गता (अन्ते मति सागति) मरने के समय पर जैसी मति होती है वैसी गति ईश्वर देता है।

कतहु सुघाइहु तें बड दोषु कही सियाई स भी हानि होती है।

करले सो काम और भजले सो राम-काम करने वाले को आलस नहीं करना चाहिये।

कमाऊ पूत किसको अच्छा नहीं लगता-काम करने वाले को सब चाहते हैं।

कभी नाच लट्टे पर कभी लट्टा नाच पर-संयोगसे एक को दूसरे की मदद की आवश्यकता होती है।

करघा छोड़ तमासे जाय } अपना काम छोड़ कर व्यर्थ के भाग्य
नाहक चोट जुहाला जाय } में न पड़े ।

कमजोर मारखाने की निशानी-निर्वलता बुरी है ।

करे तो डर और न करे तो भी डर- हर हालत में डरना चाहिये ।

कहां राजा भोज कहां गंगा तेली-बे मेल मामला ।

कारज धीरे होत है काहे होत अधीर-धैर्य रख कर काम करना चाहि
काला अक्षर भैस बराबर बिलकुल अनपढ़ ।

काम परे ही जानिये जो नर जैसो होय-काम पडने पर ही आदमी के
जी का हाल जाना जाता है ।

काल करै सो आज कर आज करै सो अन्ध, पल में परलै होयग
फेर करोगे कब्र-करना हो सो जल्दी करो ।

काठ की हांडी एकही बार चढ़ती है-कपट से एकही बार काम होता है
कागा चलै हस की चाल-बिना समझे किसी की नकल की ।

काल के हाथ कमान बूढा बचै न जवान मृत्यु से कोई नहीं बचता ।
कालेके आगे दिया नहीं जलता-यजमान के सामने किसी का बस नहीं

काजर की कोठरी में धब्बे का डर है-बुरी जगह से बुराई होती है ।
काम जो आवै कामरी का लै करे कमाच छोटी चीज का काम बड़ी

हो नहीं निकलता ।

काबुल गये मुगल बनि आये बोलन लागे बानी, आव २ करि
मरि गये सिरहाने धरघो रहो पानी- किसी की अनुचित नृहल करन

काबूली भली न सेत, दोनों को मारो एक ही खेत कोई अच्छा नहीं ।
काबुल में गधे नहीं होते-अच्छी जगह भी बुरे होते हैं ।

काजी जी फ्यों लटे, शहर के अदेशे बिना बात की चिन्ता करना ।
काले के काटे का जत्र न तत्र असाध्य अस्था का कोई उपाय नहीं ।

काम को काम सिखाता हं करते २ काम आ जाता है ।
कुआ की मिट्टी कुआ में लगती है-जहा का कमाई वहाँ स्पष्ट होती है

किस रिश्ते पर तत्ता पानी किस बन या योग्यता पर काम किया जाय ।

किसी को बेंगन पथ बराबर, किसी को विष बराबर एव ही से किसी को हानि होती है और किसी को लाभ ।

कु जडी अपने बेरों को खट्टा नहीं बताती-अपनी चीज़ को कोई पुरा नहीं कहता ।

कानी के व्याह में सो जोधों-जिस काम में शका हो उसमें अवरय विघ्न होता है । द्विद्वेस्वनर्था बहुलि भवन्ति ।

कुलिया में गुड फोरना किसी बड़े काम का थोड़ा प्रयत्न ।

काटे से काटा निकाला जाता है शत्रु से शत्रु लड़ाया जाता है ।

कुम्हार कहने से गधे पर नहीं चढ़ता श्रोद्धा श्रादमी कहने से काम नहीं करता ।

कुछ दाल में काला है कुछ संदेह है ।

कै हला मोती चुगे के लग्न मर जाय स्वामिमानी मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं ।

कोयले की दलाली में हाथ काले-बुरे काम से बुराई ही मिलती है ।

कोडी नहीं गाठ में चलो बाग की सेर-रुपया रिना सब व्यर्थ है ।

कोडी नहीं हो पास तो मेला लगे उदास रुपय बिना कुछ अच्छा नहीं लगता ।

कौन किसी के आवे जावे दाना पानी लावे—अन जल मुरय है ।

फगाली में आटा गीला—दु ख पर दु प पड़ता ।

होडी मरे सगाती चाहे—अपनासा बुरा दृष्टों का भी चाहना ।

सा वर्षा जब कृषी सुखाने } अवरर पर काम करने से
समर्थ चूकि पुनि का पढ़ाने } सफलता होती है ।

बरी मजूरी चोला काम—पूरे दामे देना और अरुद्धा काम 'करना ।

बलीखों ने फासा मार ली—छोटे काम पर घमड करना ।

- खरा खेल फरखावादी—साफ बात है ।
- खरादी का काठ काटे से ही कटता है—शरण देने ही से छूटता है,
वा काम करने ही से होता है ।
- खांड खारी का एक भाव है—अन्धेर है ।
- खाना शराकत रहना फराकत—मिल जुल कर रहे मगर दिसाय
साफ़ रक्खे ।
- खिचडी खाते पहुँचा दूटा—बडा ही कोमल है ।
- खाला जी का घर नहीं है—काम सहज नहीं है ।
- खुदा की बातें खुदा ही जाने—उमकी यही जाने ।
- खुशामद से आमद होती है—स्पष्ट (खुशामदियों का कथन) ।
- खुदा गजे को नूखून न दे—अयाचारी को अधिकार मिलना बुरा है ।
- खेती खसम सेती—खेती अपने हाथ से अच्छी होती है ।
- खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आते हैं किंग
न कित्ती समय हर चीज़ काम देती है ।
- खोरई कुतिया मखमली भूल तुन्ड आदमी का चेजा माम कग्ना ।
- खोदा पहाड और निकली चुहिया—बहुत परिश्रम का थोडा फल ।
- खरीब की हाथ बुरी होती है—गरीब को सताना अन्धे नहीं ।
- खूटे के सिर बल्लडा नाचे—जब मालिक में साहस है तो, नौकर सब
डुद्ध कर सकता है ।
- गधों को गुलकद
ग वार को पापड
गधों को खुशका } जो जिस चीज के योग्य नहीं उसकी वह
चीज़ देना ।
- गया समय हाथ नहीं आता—समय पर चूरना न चाहिये ।
- गधा धोने से बल्लडा नहीं होता—बनाने से प्रकृति नहीं बदलती ।
- गाव गये की बात—जैसा उस समय बन जाय ।
- गाय न बाछी नींद आवे आछी—कोई आगे पीछे न हो तो बेलटके गुजरती है ।

गाव का जोगी जोगना आनगाव का सिद्ध—अपने गत म मान नहीं होता ।

गिने पुप सम्हाल खाये—वचन की सरत नहीं ।

गुरु तो गुड ही रहे चेला शकर होगये—गुरु से चला बढ गया ।

शुड ग्याय गुलगुलों से आन—बनावटी परहेज़ करना ।

गुम्बज की आराज है—जैसा कदगा वैसा सुनेगा ।

गुरु कीजै ज्ञान और पानी पीजे छान—निश्चय करके काम करना ।

गेहू की रोटी को फौलाद का पेट होना चाहिये—विभव पाने पर निरभिमान होना कठिन है ।

गंगा आन हार भागीरथ के सिर पडी—एसा तो होना ही था ।

घर की खाड़ किरकिरी बाहर का गुड मीठा—घर की वस्तु की इदर नहीं करते ।

घर की मुरगी दाल घरावर—घर की वस्तु की कदर नहीं ।

घर खीर तो बाहर खीर—धनवान का आदर सब जगह होता है ।

घर का भेदी लका ढावे—आपस का फूट से बडी हानि होती है ।

घर में चूहे डडोत करते हैं—खाने तन को नहीं है ।

घर व्याह बहू कडों को डोले—काम के समय ये परवाही करता ।

घडी में घडियाल—हाल ही में कुछ में कुछ होना ।

घर रहे न तीरथ गये

मूड फोरत मर रहे

} बेठिकाने रह कर दु ख पाना ।

घोडा को घर कितनी दूर—काम करने वाले को काम करने में देर नहीं ।

घोडा घास से यारी करे तो ग्याय क्या—मिहनताना मांगने में साज न करनी चाहिये ।

घर के पीरों को तेल का मलीदा—अपनों का कम आदर करना ।

घर आये नाग न पूजिये घामी पूजन जाय—मौजे को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये ।

घर में भुँजी भांग नहीं-श्रति की दरिद्रता है ।

घर का द्वार असम के हाथ वह चाहे सो कर सकता है ।

घुसिया हाकिम रुसिया चाकर-रिशवत लेने वाले हाकिम और

। छठने वारी नौकर का विश्वास नहीं करना चाहिये ।

घोड़े का गिरा सम्हल सकता है नजर का गिरा नहीं-ऐसा

काम नहीं करना चाहिये कि किसी की नजर से गिर जाय ।

घर घर मटियाले चूल्हे हैं-चिन्ता से कोई खाली नहीं ।

घी कहाँ गया खिचड़ी में-अपनी चीज अपनी ही के काम आ गई ।

चतुर को चौगुनी मूरख को सौगुनी दूसरे के धन का परिमाण

चतुरों को चौगुना और मूर्ख को सौगुना जान पड़ता है ।

चलती का नाम गाडी- जिसकी चलते लगे वही श्रच्छा है ।

चमड़ी जाय पर दमड़ी नहीं जाय-श्रति का लालच करना ।

चना और चुगल मु ह लगे श्रच्छे नहीं-खाने और सुनने में श्रच्छे

लगते हैं और पीछे तक्रलीक देते हैं ।

खमार को अरस पर भी बेगार-दुसिया को हर जगह दु ख ।

चार दिना की चांदनी फेर अँधेरी रात थोड़े दिा की बाह बाह ।

चाकरी में ना करी क्या नौकरों में आज्ञा माननी ही पडती है ।

चिराग तले अँवेरा-अपनी घुराई नहीं दीपती ।

चिकना मु ह पेट खाली खाली दिखावट करना ।

चीज न राखे आपनी चोर गाली 'देय-अपनी असावधानी से

अपनी हानि करके दूसरे को दीप देना ।

चूहे का जना बिल ही जोदना है अपने चाप दादों का कामकरता है ।

धूनी कहे मुझे घी से सा-योग्यता से बढ़कर दावा करना ।

धोरी और मु ह जोरी नुराई करना और श्राख दिखाना ।

धोली श्रामन का साथ है उनका साथ छूट नहीं सकता ।

धोर गये कि अन्धियारी-फिर भी दाप लगेगा ।

चोर की मा कोठी में मूड देकर रोती है-अपने की नुराई होने में
आदमी मन ही मन में दुखी होता है ।

चोर की डाढ़ी में तिनका-दोपी बिनापूड़े ही बोल बठता है ।

चोर से कह तू चोरी कर और शाह से कह तू घरपै रह दोनों
शोर को घमाना ।

चींटी के मरते समय पर आते हैं-नाश के समय खलटी बातें करना ।

चोर २ मौसाइते भैया-एक से व्यसन वाले आपस में मिल जाते हैं ।

जूआ मीठी हार-ज्वारी हारने पर बार २ खेलता है ।

चौरे छुन्ने होने गये दुबे रह गये- लाम को बिये काम किया खलटी
हानि हुई ।

छूछू दर के सिर में चमेली का तेल-अयोग्य के हाथ अच्छी चीज
लगाना ।

छुटी का दूध जगान पर आगया-थडी कठिन मिहनत करनी पडी ।

छाती पर रख कर कोई नहीं ले गया-व्यर्थ लोभ न करना चाहिये ।

छोंकते ही नाक कटी-बुरे काम का तुरन्त फल मिल गया ।

छोटे मुह बडी बात-अपनी योग्यतासे बड़ कर बात कहना ।

छोटे गाव से नाता क्या-अब वससे हमारा पुछ मतलब नहीं रहा,
छोटी अथाई जुहार क्या ?

घन्दन की चुकटी भली गाडी भरो न काठ-अच्छी चीज थोडा
ही अच्छी, निम्मी चीज बहुत भी अच्छी नहीं ।

भूगडं की जड, जर, जमान, जन प्रायः बढाई रती,धन और धरती
के पीछे होती है ।

भूठा खाया जाता है मीठे को-लोभ के लिये नीच काम करता है ।

जय तक स्वास तब तक आस-भरने तक आशा नहीं छूटनी ।

कहाँ जाय भूया तदा पडे सूखा-दुर्वा को सब जगह दुःख है ।

सदा रुख नहीं वहाँ अण्ड ही रुख-जदा बढी चीज नहीं वहाँ छोटी
ही बपी मानी जाती है ।

जमाअत से कराभात मिलकरकार्य सिद्ध होता है ॥
जर है तो नर है नहीं तो पूरा खर है विना द्रव्य के आदमी को को
नहीं पूढ़ता ।

जन्म के दुखी नाम चैनसुख-गुण के विरुद्ध नाम ।

जय तक जीव कडख में तथ तरु घीन बजाउ-हिरन मरते २ शीण
की घ्वनि पसन्द करता है ।

जान है तो जहान दुनिया की कैफियत जान के साथ है ।

जाश्रों पूत दक्षिण वही कर्म के लक्षण अकर्मियों का कहीं ठिकाना नहीं

जाकर जिह पर सत्य सनेह } सचे स्नेही को अपना इष्ट पदार्थ
सो तिहि मिलत न कछु सदेह } मिल ही जाता है ।

जामन होय मलीन सो पर सपदा सहे न जिसका मन मैला होता है
वह दूसरों के त्रैभय को नहीं देख सकता ।

जाको राखे साह्यां मारि न सकि है कोय-जिसका ईश्वर रक्षक है
उसको कोई नहीं मार सकता ।

जितने मु ह उतनी घातें अरुवाह योंही उड़ा करती हैं ।

जाके पांय न फटी बियाई } जिस पर पढ़ती है वही जानता है ।
सो क्या जाने पीर पराई }

जिसकी लाठी उसकी भैंस— शक्तियों को ही विजयलक्ष्मी
मिलती है ।

जिसके जूती उसका सिर उसकी चीज से उसी का नुकसान करना ।

जिसको पिया चाहे वही सुहागिल जिसको स्वामी चाहे वह
अच्छा नौकर है ।

जितना गुड डाला जायगा उतना ही मीठा होगा जैसा जूथं
किया जाय वैसा ही अच्छा काम होगा ।

जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पेठ जिसने परिश्रम किया वन
फल मिला ।

जिसका खाइये उसका गाइये-जिसका धन्नपानी खाय, वसीना
पय ले ।

जिसके हाथ लोई उसका सब कोई-अभिनार बाले के सर थाडा
कारी होत हैं ।

जिय विनु देह नदी विनु बारी
नेसे ही नाथ पुरुष विनु नारी } विना पुठप की स्त्री की शोभा नहीं ।

जैसे फया घर रहे तैसे गये विदेश निक्कमे का घर व बाहर रहना एकसा

जैसी तेरी कोमरी तसे मेरे गीत-प्रयं से काम होता है ।

जैसे गगा न्हाये तैसे फल पाये-जैसा किया वैसा पाया ।

जैसे नागनाथ तैसे साय नाथ दोनों बगजर हैं ।

जैसी बहे बयारि पीठ तय तैसी दीजे जैसा समय हो वैसा काम करो ।

जैसा देश वैसा भेष जिस देश में रहै वहा की रीति पहन्य करे ।

जो विधि गया सो मोती गो होगया सो अच्छा ।

जो धन दीखे जात, आधा दीजे घाट-नट होती दुई सम्पत्ति में से सब
करके बचा लेना चाहिये ।

जो गरजता है सो बरसता नहीं-डोंग दानने वाला क्या काम करेगा ?

जो खोरी फरता है घट मोरी रखता है-काम करने वाधा बचाव
रखता है ।

जोगी २ लड्डे खप्परो की हानि-नगों की लडाईं में विशेष जोलों नहीं ।

जो चढ़ेगा सो गिरेगा-जो काम करेगा तो कमी हानि भी होगी ।

जोरू चिकनी मिया मजूर-व्यर्थ पनास्ट करना ।

जो किसी को कुश्रा खोदता है उसको खाई तैयार है-गोरा का
पुरा करने ताजे या स्वयं पुरा होना है

तेल बेखो तेल की धार देखो - हर एक काम को धीरज से, सोच समझ कर करो ।

थूक का घाटना अच्छा नहीं--फर खौटना ठीक नहीं ।
थूक में सचू नहीं सनते- थोड़े व्यय से बड़ा काम नहीं होता ।
थोड़ी पूजी खसमें खाय थोड़ी पूजी वाले को दुख ही रहता है ।
दर्जी की सुई कभी गजी में कभी कीमखाव में--काम वाले को कभी तगी कभी शासूदगी रहती है ।

दूधी विल्ली मू से पर फान फटाती है किसी समय चलचान को निर्वल से दबना पड़ता है ।

दया धिनु सन्त कसाई - अनुप्य में दया अग्रथ्य होनी चाहिये ।
दाता दे भडारी का पेट फटे - कोई दे किसी को घुरा लग ।
दान चित्त समान - सामर्थ्य के अनुमार दान देना चाहिये ।
दाई से पेट नहीं छिपता - ज्ञानकार से भेद नहीं छिपता ।
दाने २ पर मुहर है - जिसके भाग्य का है उसको मिल जाता है ।
दिये का प्रकाश स्वर्ग तक है - दान बड़ी वस्तु है ।
दिन ईद रात शब्वरात सदैव प्रसन्न ।
दिल से दिल को राहत है - जो कोई किसीको चाहेगा यह भी बसे चाहेगा ।

दिल को फरार } चित्त को शान्ति हो तब सब अच्छा लागता है ।
तब सूझे त्योंहार }

दुबले मारे शाहमदार दीन को ही सब सताते हैं ।
दुधैल गाय की लात भली-स्वार्थ वश सब सहना पड़ता है ।
दूल्हा के साथ घरात - स्वामी के साथ सेना
दूर के ढोल सुहावने हर वस्तु दूर से ही अच्छी लगती है ।
दूध का जला छाछ को फूक २ पीता है-किसा काम से हानि उठाने वाले को हर काम में अदेशा रहता है ।

देश चोरी परदेश भोजन—जाज क यश तर्गा म देश में चोरी करता है
और परदेश में भीय मोगने में शरम नहीं ।

देह धरे का इण्ड है सब काहू को होय—दू ल सब पर पड़ता है ।
देखी तेरी कालपी यामनपुरा उजार—कोरा नाम, तरप कुछ नहीं ।
दोनों दीन से गये पाडे, हलुआ हुए न माडे—कहीं ठिकाना न रहा ।
दौल डाल कर शामिल होना—जरा सी चीज देकर साझी होना ।
दाल भात में मूमरचन्द—व्यर्थ राग अदाना ।

दिवाली के चौंके से पडा मोटा नहीं होता—एक दिन क खाने के
कुछ नहीं होता ।

दोनों हाथों में लड्डू हैं—सब तरह लाभ है ।
दुषिधा में दौल गये माया मिली न राम-चिन्ता में कुछ नहीं बनता ।

देता देखी साधु जोग }
छीजी फाया वाढयो रोग } व्यर्थ नकन करने का हानि होती है ।

धरम खोइ धन कोऊ सेउ—वेदमानी से धन लेना अशुद्धा नहा ।
धर्म की जै होती है—(यतीधर्म ततो जय)

धूनी पानी का सयोग है—खाने पीने का साम्रा है ।
धोयो का कुत्ता घर का न घाट फा—कहीं टौर ठिकाना नहीं ।
धरम का धरम करम का करम—स्वार्थ परमार्थ दोनों हैं ।

धनि रहीम जल पक को, लघुजिय पियत अघाय ।
उदधि बडाई फौन है ! जगत विघासो जाय ॥

होना नती का सार्थक है जिससे कितनी का काम निकले ।

न रहे घाँस न घजे धासुरी—जद से मिरा देना ।
नदी नाव का सयोग—सयोग से मिलना होता है ।
नये चिकनिया अण्डी का फुलेल—भादीरे का काम ।

नदी में रह कर मगर से बैर-जलजान से उसके पास रह कर वर नहीं करना चाहिये ।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी-किसी काम के लिये ऐसा प्रयत्न न करना चाहिये जो न हो सके ।

न्यारा पूत परोसी दाखिल-न्यारा होने से अपना नहीं रहता ।
नमक का सहारा ही बहुत है थोड़े ही सहारे से काम चल जाता है ।
नई नाइन वांस का नहना-नतो वस को कुछ तजुब्बा है, न उसके पाम कोई ठोक साधन है ।

नया नो दिन पुराना सौ दिन पुरानी चीज़ से घृणा न करनी चाहिये,
क्योंकि थोड़े दिन में सब चीज़ें पुरानी हो जाती हैं ।

नक्कारखाने में तूनी की आवाज-बड़ों में छोटों की कौन सुनता है ?
न नाम लेना न पानी देना-उसका कोई न रहा ।

नजर चूकी माल दोस्तों का-चोरों की कसरत है ।

नाई बाल कितने ? जिजमान आगे आ जायेंगे जो फल प्रत्यक्ष होने वाला है उसका क्या पूजना ?

नाच न जाने अँगन टेढा-अपनी अज्ञानता का दोष दूसरों पर मड़ना ।
नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा-नादान से दोस्ती नहीं करनी चाहिये ।

नाम बड़े दर्शन थोड़े-कोरा नाम ।

नाना के आगे ननिहार की बातें-किसी विषय में अपने से अधिक जानने वाले से बातें कहना मूर्खता है ।

नाम भागवती और भोली में सिर-भूठी उड़ाई मारना ।

नानी तो कपारी मर गई नवासे के नौ २ ब्याह-क्यों व्यर्थ सेनी मारता है ?

नीचे की सांस नीचे ऊपर की ऊपर-दग रह जाना ।

नीयत की वरकत—ईमानदारी से धन बढ़ता है ।
 नौ नगद न तेरह उधार—बपार से नकद थोड़ा भी मिलना अच्छा है ।
 नौ दिन चले अट्टाई कोस—अधिक परिश्रम का थोड़ा फल ।
 नगी क्या न्हाय और क्या निचोडे—निर्धन कुछ नहीं कर सकता ।
 नाइन दूसरे ही के पैर धोना जानती है—दूसरे से ही यह जानते
 हैं स्वयं कुछ नहीं करते ।
 नीम हकीम रातरे जान—अयोग्य से काम के गिगड़ने का डर है ।
 नामर्दी तो ईश्वर ने दी मार २ तो किये जाथो—अशक्त होन पर
 भी पृष्ठ करना चाहिये ।
 नौ सौ चूहे खाय बिलाई हज्ज को चली—उम्र भर तो अन्याय किया
 अब भजन करने बैठे हैं !
 पढे न लिखे और नाम विद्यासागर—गुरु के विरुद्ध नाम ।
 पराधीन सपनेहु सुख नाही—परतत्रता म सुख नहीं ।
 पढे ता हैं पर गुन नहीं—पढे तो हैं पर व्यवहार की शिक्षा नहीं पाई ।
 परदेशी की प्रीति भोल (फूस) का तापना—ये दुस्वदाह होत हैं ।
 परदरी की प्रीति से, फूस क तापन की तरह, अथिक सुख मिलो क बाद दु स
 दो दु स मिलता है ।
 पराया घर धूक का भी डर—पराये अधिकार में रहना बुरा है ।
 प्रकार खीर होगया दरिया—परिश्रम का उलटा फल निकला ।
 पराया सिर पमरी बराबर—दूसरों के दु स पर ध्यान न देना ।
 गी का हगा ऊपर आ जाता है—बुराई छिपती नहीं है ।
 चों धी में—सब तरह से सिद्धि है ।
 गारह है—पूज लाभ है ।
 नी पी घर पृष्ठना नाही भलो विचार—काम करने के पहिले ही
 भलाई बुराई साच तना चाइय ।
 उदलियों से पहुँचा भारी पाच सात स एक की प्रतिष्ठा होता है ।
 का निवाहना घाँडे की धार है—नीति करना तो महग दे पर
 वाहना पठिा है ।

पासा पडे सो दाव राजा करे सो न्याय—शक्ति वाले की माननी ही पड़ती है ।

पांच पत्र तहां परमेश्वर—पांच पत्रों की बात माननी चाहिये ।
पेसे की हांडी गई तो गई कुत्ते की जाति तो जानी घोड़ी हानि
तो हुई, पर, स्वभाव तो जान लिया ।

पत्र कहें बिल्ली सो बिल्ली—पत्रों का झूठ कदा भी सच ।
पर हित घृन जिनके मन माछी दुष्टों की, दूसरों का काम बिगाड़ने
के लिये, अपना नुकसान करना बड़ी बात नहीं ।

फूड़ फूड़ ताल भरता है—घोड़े घोड़े से बहुत होता है ।
फूल न पाती देवी हाहा—बोरी बातें बनाना ।

बड़े बोल का मिर नीचा—घमडी की लज्जित होना पड़ता है ।
वनियां भी अपना गुड छिपा कर खाता है ।
घकरे की माँ कबतक खेर मनावेगी—यही हाल है तो किसी न किसी
दिन आपत्ति में फसेगा ।

बन्दर बरा जाने अदरक का स्वाद—मूर्ख गुणों की नहीं समझता ।
बन्दर के गले में मोतियों की माला—अयोग्य को कोई बड़ा पद,
प्रतिष्ठा व वैभव मिलता ।

बजाज की गठरी का भींगुर मालिक—दूसरों की वस्तु पर घमड़ करना ।
बगल में सोटा नाम गरीबदास—गुण के विरुद्ध नाम ।
बराती खा पी कर अलग हो जाते हैं दूल्हा दुलहिन से काम
पड़ता है—सिंघाने वाले लड़ाई कराकर अलग हो जाते हैं ।
बनी के सत्र साथी—अच्छी दशा में होने पर सत्र साथी होते हैं ।
बगल में तोशा, किसका भरोसा आवश्यकीय वस्तु पास होनी चाहिये ।
बासन से बासन खटकता ही है—कभी २ पास रहने वाले से बिगड भी
जाती है । पढोसियों में कभी २ बिगड भी जाती है ।

बार बार चोर की तो एक बार साह की कभी न कभी चानाकी
प्रकृ हो ही जाती है ।

बलवान के बीसों जिसे मारे और रोने न दे बलवान के अयाय
को क० भी नहीं सक्त ।

यद् अन्ध्रा यदनाम घुरा-व्यर्धं यदनाम होना बहुत ही बुरा है ।

यसन्त की खर ही नहीं-तुम्हें असली बात मालूम ही नहीं ।

बाहर वाले खा गये घर के गाँवों गीत-करने वालों का कुछ लाभ
नहीं हुआ ।

बाप न मारी पोदनी घेटा तीरन्दाज -व्यर्धं सेखी मारते हो ।

बाप की पोखर है तो न्या कीच खानी है ? यदि घर गुजर नहीं
है तो दूसरा जगह क्यों न प्रबन्ध किया जाय ।

बापन तोले पाव रस्ती --बिलकुल ठीक ।

बारह वर्ष में घूरे की दशा भी फिरती है-कभी न कभी अग्रग्य
अच्छे दिन आवेंगे ।

बारह वर्ष दिल्ली में रहे क्या भाड भौंका-अच्छी जगह से भी
कुछ नहीं सीखा ।

बारे की माँ न मरे और बूढ़े की जोरू-इनके मर जाने से बहुत बच
होता है ।

बाघने गाँव में ऊट आया-भूयों को साधारण ही चीज़ बनोसी होती है
बाजार किस का ? जो लेकर दे उसका - रुपया चुका देने वाले का
बाजार से सब कुछ मिल जाता है ।

भरे व्याह में बुर खाई तो फिर क्या अब धुर खाय-अच्छी दशा
में भी कष्ट से रहा, अब क्या है ?

बाल की पाल निकालना-व्यर्धं की मुक्त चीनों करना ।

बाह गहे की लाज -बाँच में पटक पूरा पारना ।

बिल्ली खायगी नहीं तो लुढ़काय देगी कुछ व्यर्थ शक्ति करते हैं ।

विल्ली के भागों छौंका टूटा-सयोग से काम हुआ ।
 बिन मांगे मोती मिले मागे मिले न भोझ- मागना नहीं चाहिये ।
 त्रिजली कांसे ही पर पड़ती है-दु ए भी बड़ों पर ही पड़ता है ।
 पिच्छू का काटा रोवे सांप का काटा मोवे-मीठी मार बुरी है ।
 बिन देखे राजा चोर बिन देखे किसी का नाम नहीं ले सकते ।
 विल्ली को ख्वाब में भी छीछड़े नजर आते हैं-बुरों को बुराई ही
 सूझती है ।
 बांझ क्या जाने प्रसूत की पीडा ? जिसको दुःख होता है वही जानता है ।
 बुद्धिया मरी नो मरी पर आगरा तो देखा- हानि बढाने पर अनुभव
 तो हुआ ।
 बूर का लड्डू खायगा सो पछतायगा न खायगा घह'भी पछतायगा
 दोनों तरह मुशिकल है ।
 वे ही मियां दरवार को वे ही चूल्हा फूरने को सब काम उसे ही
 करना पड़ता है ।
 बैठे से वेगार भली-कुछ न कुछ करना चाहिये ।
 चैले दीजे जायफल क्या बोले क्या खाय मूर्ख गुण की कदर नहीं
 करता ।
 पैटा ठाला बनियां सेर बांट तोले-करने वाला कुछ न कुछ करताही रहता है ।
 बल न कूदा कूदी गौन बिन-सम्पन्ध दूसरे के बीच में पहना ।
 बुरी सगति से अकेला अच्छा-बुरों का साथ न करना चाहिये ।
 भरे में भरता है-धन मे धन मिलता है ।
 मरी जवानी मक्का ढोला-युवा अस्प्या म सुस्त पहना ।
 भरे समुन्दर घौंघा हाथ-पूरा लाभ होने की जगह से कुछ न मिलना ।
 भग्भूजे की लडकी केसर का तिलक-वे जोड़ काम ।
 भांग खाना सहज है नशा कठिन है-बिना समझे किसी काम का
 कर, डालना सहज है पर उसका परिणाम भोगना कठिन है ।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार व्यर्थ घमड़ करना ।

भूले बनिया भेड़ खाई

अब याऊ तो राम दुहाई

} असावधानी से कोई काम करने पर
पीछे पड़ताना पड़ता है ।

भूप में किवाड ही पापड-भूष में बुरी चीजे भी अच्छी लगती हैं ।

भूष में गुलर ही परवान-

भूषा बगाली भात ही भात पुकारता है स्वार्थ अपनी धुनि में मस्त है ।

भूलि गई राव रग भूलि गई जिकडी तीन चीज याद रहिं नौन

तेल लकडी रोटियों की चिन्ता में सब भूल गया ।

भेड़ की लात घोंटू तक अधिक से अधिक इतना कर सवगा ।

मन में राम बगल में ईट-कपट का बनाव करना ।

मरना विचारा तो हटना कैसा? प्राणों पर खेल कर काम करने वाला

पीछे नहीं हटता ।

मरता क्या न करता जो मरने से नहीं डरेगा वह सब कुछ कर सकगा

मन के लड्डुओं से भूष नहीं जाती-केवल विचार से काम नहीं चलना

मन चङ्गा तो कठोती में गङ्गा-भद्रा से सब कुछ हो जाता है ।

पन के हारे हार है मन के जीते जीत मन से काम होता है ।

मन उमराव कर्म दरिद्री-इच्छा पूरी होने का साधन नही ।

मक्खी बेटो शहत पर रही पन्न खपटाय-

हाथ मलै और शिर धुनै लालच बुरी बलाय } लालची न
होता है ।

अन मन भावे भूड हलावे भूठी नहीं करना ।

ह नगे वैयाप भूषे-बड़ा अमागा है ।

मार मार तो किये-जा नामर्दी तो ईश्वर ने दी-कशक होने पर ।

मांटे का माट विगड गया सब प्रराव हो गय ।

मान का थोडा हीरा के समान आदर की जुरासी चीज भी अच्छी है ।

- मार से भूत भागता है मार से सब डरते हैं ।
- मान न मान मैं तेरा महमान-जबरदस्ती तिर पडना ।
- मानो तो देव नहीं तो परवर-विश्वास से सब है ।
- मान का पान बहुत है आदर की जरा सी चीज भी बहुत है ।
- मारा घोंटू फूटी आँसु-कुछाँसे कुछ हो गया ।
- माल पर जगात है- हैसियत के अनुसार खर्च किया जाता है ।
- मारे और रोने न दे-जबरदस्त के सामने कुछ बस नहीं चलता ।
- मिल गये की हरंगगा मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा ।
- मीठा और भर कठौती अच्छा और बहुत ।
- मीठा २ लप २ कडुआ २ थू थू मुँह में तो आनन्द मनाना और
दुःख पढ़ने पर घराना ।
- मुर्गी को तकुआ का आव बहुत है-दीन जनों की धोड़ी ही हानि
बहुत है ।
- मुल्ला की दौड मसजिद तक-अधिक से अधिक इतना करेगा ।
- मुपत की शराब काजो को भी रवा है-मुपत की चीज किसी को
बुरी नहीं लगती ।
- मुडा जोगी पिसी दवा का फया ठीक इनको पहचान नहीं ।
- मूरख की सारी रैन छैल की एक घडी मूर्ख का बहुत समय का का
बुद्धिमान के थोड़े समय के काम के भी तुरंत नहीं होता ।
- मूल से ब्याज प्यारा होता है ब्याज के लिये असल रूपये की पर-
वाह नहीं ।
- मैंडकी को जुकाम-छोटे आदमी का नजाकत करना ।
- मेरे ही घर से आग लाई नाम धरा वैसान्दुर-दूसरे की चीज पर
घरबंद करना ।
- मोती की सी आव है-मान का ध्यान रखना चाहिये ।
- मोची के मोची रहे-जैसे के तैसे ही रहे ।

मौसी का घर नहीं है—जरा सोच समझ कर काम करो ।

यथा राजा तथा प्रजा—जैसा स्वामी वैसा ही सेवक ।

यार की यारी से काम } मतलब से मतलब है ।

उसके फेलों से क्या काम } (स्वार्थियों का कथन)

यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम था वैसाही निवृत्ता ।

रस्सी का साप घन गया—थोड़ी बात बहुत बढ़ गई ।

रसोई का विष कसाई का कूकर—इनकी राने को खूब मिलता है ।

रख पत रखा पत अपनी इज्जत करानी है तो दूसरों की इज्जत करो

रस में विष फैला दिया—हर्ष में शोक कर दिया ।

रस्सी जल तो गई पर पेंठ न गई—बुरी दशा होने पर भी घमड़ नहीं गया ।

रस से भरै तो विष क्यों दे—रसाई से काम हो तो कड़ाई न करे ।
(मोठी छुरी) ।

राजा करे सो न्याय, पासा पड़े सो दाव—अबरदस्त जो कुछ करे
सब ठीक ही है ।

राजा किसके पाहुने जोगी किस के भीत इनकी दोस्ती पर विरवास
नहीं करना चाहिये ।

राम राम अपना, पराया माल अपना—भकारी से पराया माल लूटना ।

राम भरोसे वे रहें परबत पै हरियाय—कुछ मत करो ईश्वर करेगा
उही होगा (शालतियों का कथन)

राई से पर्वत करै पर्वत राई माहि ईश्वर छोणे को बडा श्रौर बडों
को छोटा कर सकता है ।

रस खाय रसाइन बनती है गम घाना अच्छा है ।

रीते भरे भरे दुलकावे } ईश्वर को सब सामर्थ्य है ।
महर करै तो फेरि भराये }

रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हासी किसी से दिखनी न करो ।

रोज कुआं छोड़ना रोज पानी पीना-नित्य कमाना नित्य खाना।
रीछ का बाल भी बहुत है-सूम से घोड़ा ही धन बहुत है।

रांड सांड सींडी सन्यासी } काशी में इन चारों से मावधानी रखनी,
इनसे बचे तो संवै कासी } चाहिये।
रग में भग-सुख में दुःख।

रडी पैसे की यार हे उमकी मुह्यत धन के लिये है।
राड का साड राड का लडका बिगड जाता है (वेहया-उडएड)
रोजगार और दुश्मन धार धार नहीं मिलते-मौका मिलने पर इन्हें
छोड़ना न चाहिये।

राजा रूठेंगे तो अपना सुहाग लेंगे क्या किसी का भाग लेंगे-
मालिक नाराज होंगे तो अपनी नौकरी लेंगे।
लटा हाथी विटौरा सा-बहुत बड़ा मनुष्य बिगडने पर भी छोटों से
बड़ा ही रहता है।

लकीर के फकीर---अध विश्वासी हैं।
लकडी के बल बदरी नाचे--दर से काम होता है।
कमजोर की जोरू सब की सलहज--गरीब को सब बेवते हैं।
लडका बगल में ढढोरा नगर में होश द्वाश, दुरुस्त न होना।
लगी बुरी होती है--चित्त में चुभने पर ऊच नीच नहीं सूकता।
लालच बुरी बला है--लालच अन्याय कराता है।

लालों के देव बातों से नहीं मानते--दुष्ट पुरुष बातों से नहीं मानते।
लाल का घर खाक कर दिया--सब धरनाद कर दिया।
लाल गूदडे में नहीं छिपता--अच्छे बुरी स्थिति में भी नहीं छिपता।
लीक २ गाडी चले लीक ही चले कपूत। लीक छाडि नीनों
चले सायर, सिंह, सपूत--अन्नतिशील व्यक्ति अपनी मलाई का नया
मार्ग ढूँढता है।

लहठी मारने से पानी अलग नहीं होना-अना किसी भीति नहीं कूता।

लिखें मूसा पढ़े ईसा अपना ही लिखा थाप न पढ़ा जाय ।

लूट के मूसर भी भले हैं मुक़ की कोई चीज़पुरी नहीं ।

लोहा जाने लुहार जाने } लड़ाई फ़राकर बीच का दूर हो
धौंकनहारों की बलाय जाने } जाता है ।

लोह लगा कर शहीदों में दाखिल होना मकारी करना ।

शहद की छुरी-भीठी बातें बना कर हानि पहुँचाना ।

शकर खोरे को शक्कर तैयार है-जैसे को तैसी चीज़ मिल जाती है ।

शाम के मरे को कय तक रोवें अभी से केसे पूरा पड़ेगा ।

शिकार के समय कुनिया हगासी-काम के वक्त जी चुराना ।

सब के दाता राम-ईश्वर सब को देता है ।

सत मति छोड़े सूरमा सत छोड़े पति जाय-कर्तव्य न भूना
चाहिये । सत्य का पालन मदा करना चाहिये ।

सेत सेत सब एकसे करे कपूर कपास अच्छे बुरे की पहचान नहीं,
अपेद दुदाई ।

सखी से सूम भला जो नुरत देय जघाय किसी को आशा में नहीं
रखना चाहिये ।

सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर-सूम माल के लिये जान दे
बैठता है ।

सब दिन जात न एक समान-सुख दु ख सदैव नहीं रहते ।

सखी (दाता) और सूम साल भर में बराबर हो रहते हैं स्पष्ट ।

सच कहने में आधी लड़ाई होती है-सच बुरा मालूम पड़ता है ।

सभी बात छोटी मुख्य दाल रोटी एसा काम करना चाहिये, जिसमें
रोगी मिले । पेट भरना ही जीवन का अदेश्य समझने, प्राणों की रक्षि ।

सब से भली चुप्य चुप रहने में कोई खपेड़ा उठने का दर नहीं रहता ।

सब गुण भरी बेतरा साँठि किसा बात की कमी नहीं ।

सब गुड लाट हो गया सब काम गिगड गया ।

सदा नाव कागज की, बहती नहीं कच्चा काम थोड़े दिन में, विाद जाता है ।

सदा दिवाली साधु की जो घर गेहूँ होय यदि धन है तो नित्य त्यौहार है ।

सब गहनों में चन्द्रहार वह सब में अच्छा है ।

सत्तू बांध के पीछे पडना किसी तरह से दम नहीं लेने देना ।

साप छत्रु दर का सा डौल है सब तरह मुश्किल है ।

साप मरै न लाठी दूटे-फिषी का नुकसान न हो और काम हो जाय ।

सांच को आंच नहीं सच को दर नहीं ।

सामन सूखे न भादों हरे-सदा एक से ।

साप निकल गया लकीर पीटने से क्या-श्रवसर चूकने पर पछताने से क्या लाभ ?

साथ के लिये भात छोडा जाता है साप बढी चीज़ है ।

सावन के अन्धे को हरा ही हरा दीखता है-धन वाले को धन ही दीखता है वा सुखी को सुख ही दीखता है । ;

साभे की हँडिया चोराहे पर फूटती है साभे में निर्वाह होना कठिन है

सिर पर पडी बजाये सिद्धि आ पडने पर काम करना ही पडता है ।

सिर मूड के घुटना नहीं मडा जाता जो कुछ धर चुका है इससे अधिक क्या करेगा ।

सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता निरी सिपाई से काम नहीं चलता
सूरज धूल डालने से नहीं छिपता-अच्छा आदमी बुरों के कहने से
बुरा नहीं होता ।

सेख क्या जाने सावन का भाव-मूर्ख को गुण की पहिचान नहीं ।

सूने घर चोरों का राज पीठ पीछे चाहे जो कुछ करो ।

सुबह का भूला शाम को घर आ जाय तो भूला नहीं कहाता
अपनी भूल को आप ही जख्दी सुधार ले तो अच्छा है ।

मृत के बतौले हो जाय - चाहे जो कुछ हो जाय ।

सूरदास कारी कामरि पे चढै न दूजौ रग-जिस पर जिस बात का
पूरा प्रभाव हो गया है वह उससे नहीं उठता ।

सिद्ध को साधक पुजाते हैं-सहायता से काम होता है ।

सुन रागेश अस को जग माही } ऐसे आदर्श कम र जो विभव
प्रभुता पाय जाहि मद नाही } पाकर घमट न करें ।

सोकीन बुढिया खटाई का लहँगा नादीदे का बनावत ।

जो घर सत्यानाश जहाँ है अति बल नारी-बलवान स्त्री से घर बिगड़ता है

हरी खेती ग्याभन गाय, जब जानौं तब मु ह में जाय- जब तफ
गाय बच्चा न दे, नाज पक कर घर में न आजाय, तब तक उसका
ठिकाना नहीं । अभी क्या ठिकाना है !

हरा लगै न फिटकरी रग चोखा ही आवै बिना व्यय किये हुए
काम बन जाय !

हम तुम राजी, तो क्या करेगा काजी-यदि दो मनुष्यों में सथा मा
है तो बीच वाले बिगाड़ नहीं सकते ।

हाथ की लकीर नहीं मिटती अपने छूट नहीं सकते ।

हानि लाभ जीवन मरन, यश अपयश विधि हाथ-काम किये
नाशो फल ईश्वर के हाथ है ।

हारे भी हार और जीते भी हार-हमें विवाद करना पसन्द नहीं ।

हाथ पाव की काहिली मु ह में मूँझै जाय आलस के मार जरा से
काम को नहीं कर सकते ।

हाथ फगन को आरसी क्या-प्रत्यक्ष के निये प्रमाण की क्या
आवश्यकता है ?

हाथी के दाँत दिखाने के और होते हैं और खाने के और-बहते
पूछ और, करते कुछ और ।

हाजिर मैं हुज्जत नहीं--जो कुछ है सो सामने है ।
हिमायत की गधी पेटाकी फे लात मारती है--किसी बड़े आदमी के
सहारे से अपने से अधिक शक्तिवान से लडना ।

हिसाब जौ जौ फा दान सौ सो फा- हिसाब साफ रहना चाहिये ।
दिनोज दिल्ली दूर है--वदेश्य सिद्धि में देरी है ।

हीरे की परछ जौहरी जाने- गुण की परीक्षा गुणी ही कर सकता है ।
हुक्के की मारी आग बाकी का मारा गांव--दुक्के वालों की आग
श्रीर बकाया लगान से गाव की हालत धुरी होती है ।

हाथी के पैर में सव फा पैर--बड़ों के साथ छोटी की गुजर है ।
होनहार विरवान के होत चीकने पात होनहार के लक्षण पहले में
ही दिखाई देते हैं ।

। एक करै सव लाजे--एक के करने से सब साधियों को लज्जित होना
पडता है ।

अभ्यास सारिणी विद्या--विद्या अभ्यास से आती है ।
अति दर्पेन हता लका--अति के घमट से मनुष्य गिर जाता है ।
अति भक्ति चोर के लक्षण- अत्यंत खुशामद, स्वार्थी करता है ।
अटका वनियां दे उधार--दबे हुए आदमी को सर्व सहना पडता है ।
अपने मु ह धन्ना चाई-- अपने मु ह बढ़ाई मारना ।
अपना वही जो आवे काम- स्पष्ट ।
अपना २ फमाना अपना २ खाना -सब का अलग २ काम करना ।
अपनी फुटी न देखे दूसरे की फुली निहारे--अपनी चुराई, नहीं
दीपती दूसरे की आलोचना करते हैं ।

अन्नदान महादान-- भूते को भोजन देना चाहिये ।
अपने आप मिया मिट्टू बनना - अपनी बढ़ाई आप करना ।
अपना सा मु ह लेकर लोट जाना पिसियाना पडना ।

आप डूबे और को भी ले डूबे-अपनी हानि हुई दूसरों की भी हानि को ।
आठों गॉठ कुम्भैत-घात वात में चालाकी ।

अपनी जाय उधारिये आपन भरिये लाज अपने की बुराई किस्ती
स नहीं कह सकते ।

आती लक्ष्मी को लात मारना ठीक नहीं-जाभ नहीं छोटना चाहिये ।
आप करे सो काम पहले हो सो दाम-हाथ का काम पास का दाम
काम देता है ।

आठ कनौजिया नौ चूल्हे-मिलके काम न करना ।

आओ वे पत्थर पड मेरे पांव-अपने हाथ दुःख मोन लेना ।

आगे नाथ न पीछे पगा-जिसके कोई न हो ।

आत्मवत् सर्व भूतानि-सब जीवों की आत्मगत देखे ।

आदमी में नऊआ, जानवर में कऊआ चालाक होता है ।

आदमी जानिये घसे, सोना जानिये कसे-आदमी पास रहने से जाना
जाता है ।

आग खाए तो अंगारा उगजे-जैसा करे वैसा पावे ।

आप चीती कह कि जगे चीती-सत्कार की क्या कह अपनी भुगती
कहता है ।

आज के मरे आज ही नहीं जलते धीरज से काम करो ।

आप लिखे खुदा पाचे-अपना लिखा ही न पड़ा जाय ।

आशा परम धन है-आशा ही से काम होना है ।

आशा का मरे निराशा का जिये आशा में असतोष और निराशा
में सतोष आ जाता है ।

आग लगे तब डुआं छोड़ना-रहिजे तब नहीं सोचना ।

आन भारी तो माथ भारी-कन्नी से माथे में दब होता है ।

आमों की कमाई नीतुआं में गमा दी किमी, जोग का नफा किमी में
लग जाय ।

आँसु का अघा गॉठ का, पुरा-मूर्ख घनवान ।
 आँसु बची माल दोरती का- चोरा को कसरत । सावधान रही ।
 आँसु हुई चार तो दिल में आया प्यार- आँसुओं के सामने ही, शक्ति
 की मुहब्बत होती है ।
 आँसु हुई ओट तो दिल में हुआ खोटा अलग होते ही भूल गये ।
 आँसु कान में चार अँगुली का फर्क है-विना, देखे मित्रास नहीं
 करना चाहिये ।
 आसमान से गिरा खजूर में अटकता धाता ने, दिया बीच हाथों ने
 झमेले में डाल दिया ।
 आसमान से बातें करना है-बड़ा अभिमानी है ।
 आसमान में थोड़ी लगाता है-बड़ा चालाक है ।
 इत्तफाक बड़ी चीज है-एक रखना चाहिये ।
 एक लम्ब पूत सवालख नानी ता रावण घर दिया न, याती-
 अत्यन्त गर्व करता है उसका नाश होता है ।
 इस हाथ दे उस हाथ ले हाल की गल फल मिलता है ।
 इनके चाटे रोंगटे नहीं जमते-बड़े भीतरे हैं ।
 इसकी दवा लुकमान के पास नहीं-यह किसी की नहीं मानने का ।
 उतावला सो धावला धीरा सो गम्भीरा कार्य में धैर्य रखना चाहिये ।
 उखली में सिर दिया तो मूसलों का फया डर-काम शुरू करने
 पर विघ्नो से नहीं डरना चाहिये ।
 उसके पौ धारह हो गये-बहुत लाभ हुआ ।
 उसका मुँह काला हो गया फलक लग गया ।
 ऊट चढै ऊँचा काटे-चुरे दिनों में शचानक विपत्ति टूट पड़ती है ।
 ऊजड खेडा नाम निरेडा-कीरा नाम ही नाम है ।
 ऊट वहे गदहा धाहले वह अशुचित साहस करता है ।
 ऊँची दुकान को फीका पकवान्त पाली दिवावदी काम है ।
 पकान्त घासा भगडा न हँसा पकान्त में रहने में कुछ खटका नहीं

टाट का खगोटा नवाब से यारी-वेशमी के साथ श्रेणी मारना ।

आँखों पर ठीकरी धरती-वेशम होगया ।

दलती फिरनी छोड़ काई एकती दशा में नहीं रहता ।

तिल गुड भोजन नीच मितार्ई, आगे मीठ पाछे कडुआई-पाँछे
इनसे धोका होता है ।

तीनों पन एक से नहीं जाते-कभी दु स कभी सुख होता है ।

तीरथ गये सु तीन जन, चित्त चचरा मन चोर, } बुरे दिल का
एकौ पाप न काटिया सो मन लादे और
मनुष्य अच्छी जगह से भी बुराई सीधता है ।

तेल देयो तेल की धार देयो-जरा सोचो समझो ।

तीर नहीं तो तुझा-यदि काम होजाय तो होजाय नहीं प्रैर ।

तेली जोरे परी परी महमान लुटाये कुप्पा-सोग दूसर के धनकी अर्च
करने में दरग नहीं करते ।

दमडी की बुल बुल टका हलाली काम घोड़ा निकले, खर्च बहुत हो ।

दया धर्म नहीं तन में, मुखडा पया देखे दरपन में- बिना दया धर्म
के मनुष्य, मनुष्य ही नहीं ।

दिया तले अँधेरा अपनी वा अपने पास की खर ही नहीं ।
इधर उधर का प्रबन्ध ।

दिल जाने सो दिलदार-जो सुख दु स पर ध्यान रखे वही अपना है ।

दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम फिर म बुद्ध न बना ।

दुयली और दो अपाढ़-दुखी पर और दु'ख पडना ।

दो घर का पाहुना भूखा मरे- काम किसी एक के सिर होना चादिये ।

नये २ हाकिम नई २ बात-रोज़ दग बढ़ते हैं ।

नाई की घरात में ठाकुर ही ठाकुर निशनों के समूह में फोई काम
करने वाला नहीं ।

नामी बनियाँ कमाय खाय, नामी चोर मारा जाय-किसी का नामी
होना अच्छा किसी का दुप है ।

नाक कटी पर हठ न हटी मूर्ख नुकसान होने पर भी हठ नहीं छोड़ता ।
 नाक दवाने से मुँह खुलना है दवाव पड़ने पर बात खुलती है ।
 नाक काट के दुशाले से पौछना-हानि करके हमदर्दी दिखाना ।
 नीम न मीठो होखे जो लींचे तू घीव से-दुष्ट नेकी करने पर भी
 स्वभाव नहीं छोड़ता ।

नेकी का बदला बदो-भलाई के बदले में बुराई ।
 नौकरी की पत्थर पर ज़ट है-कुछ ठिकाना नहीं ।
 नौ की लफ़्डी, नब्बे रच-कराती बात के लिए बहुत आटम्वर ।
 पर उपदेश कुसल पन्तेरे-दूसरों की से कहते हैं करते कुछ नहीं ।
 पराये, पार को मलीदा, घर के देव को धतूरा-दुसरो की खातिर होती है ।
 पराये धन पर लक्ष्मी नारायण-दुसरे के धन की खैरात ।
 पढ़े फारसी बेचें तेल, ये देखो कर्ता के खेल-भाग्य से पड़े तिले भी
 मारे २ फिरते हैं ।

पर धन राखे मूरखचद धरोहर रखना मूर्खता है ।
 पाँडे जो पछतायगे, सूखे चने चवायगे हार कर यही करना पड़ेगा ।
 पराई नौकरी साप खिलाने के बराबर है । नौकरी में लटका ही
 रहता है ।

सतोषी सदा सुरी स्पष्ट ।

पराई हँसी गुड से मीठी-दुसरो की हँसी अच्छी मालूम पड़ती है ।
 पानी में पत्थर नहीं सजता-इसमें बसका कुछ नहीं, बियाड़ता ।
 पिया परदेश गये अन्न उर-काहे, का-अव कोई देलो वाला नहीं ।
 पिछली चोदिया खाई है पीछे सोचते है ।
 पुराना बँध और नये ज्योतिषी की बदर होती है ।
 पैसा कहीं पेड पर नहीं फलता-पैसा कठिनता से मिलता है ।
 पैसा करे काम-वाँची करे सलाम-पैसा से सब होता है ।
 पैर का जूता पैर में नहीं का तहा ।

पक्षों के मुख परमेश्वर-पक्षों के मुख से जो निकले वह ठीक है ।
फिर पढ़ताये क्या हुआ जय चिडियां चुग गईं खेत समय घूकने
पर पढ़ताने से क्या ?

कूक २ कर पैर रखना-तोच समझ कर काम करना ।

फूला न समाया-बहुत सुरा हुआ ।

बहनी गंगा हाथ पखार लो-भौका है काम करलो ।

बड़े मिया सो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अटला-ये ख से भी
चढ़ाकर हैं ।

घात गये कुछ हाथ नहीं है घात न गिगडने पावे ।

घाप मरा घर वेटा हुआ इसका टोटा उसमें गया-हानि काम
परवर हो गया ।

घाप राज घर पाये न पान, दात निकारे निकारे प्राण नीच पोड़े
विभव से ही इतराता है ।

धिच्छू का मंतर न जाने सांप के विल गें हाथ डाले-योग्यता से
चढ़ कर काम करा ।

विधि प्रपञ्च गुन अरगुन सागा दुगियामें मलाइपुराई मिली हुई है ।

धीती ताहि विसारदे आगे की पुधि लोदु-स्पष्ट

दुरे काम के दुरे हवात्त (नतीजा स्पष्ट)

वेदमाती का फाला मुँह-वेदमाती नहीं करनी चाहिये ।

जैसे से वेमार भली-बैठ रहने से कृष्ण करना ही अच्छा है ।

मई गति साप छुँदर फेरी विसी मति निर्याद नई ।

मरी पछिया ब्राह्मण के नाम विद्वन्नी चीज दान को ।

पच्छुड माग के घेंटा सिंह जरा पात पर शयी मारना ।

मन में बसे सो मुपना दुरे मन की पात स्वप्न में दिग्द देती है ।

अग्द की बात और गाडी का पहिया आगे को चलता है—भले
आदमी बात नहीं बदलते ।

मनुष्य देख कर बात करना-दुमरे का स्वभाव देख कर बातें करना ।
मागे आये न भीख तो सुर्ती-भाना सीध तमायू वाले जरूर मागते हैं ।
माने तो देवता नहीं तो पत्थर-विश्वास से सब कुछ है ।

मा के दुलार से लडके की पारायी-माके प्यार में लडका बिगडता है ।
मानो चाहे न मानो, हम तुम्हारे पच-दिना पूछे बीच-में बोलना ।
मारें सिपाही, नाम सरदार का-कोई कर किसी का नाम हो ।

मिजाज क्या है तमाशा, घडी में तोला घडी में माशा शीघ्र
बदलने जाना स्वभाव है । छिन बुद्धि है ।

मिस्कों से पेट भरता है किरकों से नहीं बातों से काम नहीं चलता ।
भियां रोते क्यों हो ? सूरत ही ऐसी इयेशा का मनहस है ।

मिया के मिया गये, बुरे २ सुपने आये दु'रा पर दु स ।

रहे न वास न बजे वासुरी-कारण ही नहीं रहेगा तो कार्य कैसे होगा ।
राड साड और नऊटा भैंसा, ये बिगड़े तो होवे कैसा-इन्हें कोई नहा
सम्भल सकता ।

लडाई का मुह काला लडाई चुरी है ।

लडना दे पर बिछुडना न दे पास होकर लडते रहें मगर अजग नहीं हों ।
लिपते न घने, कलाम टेढ़ी-बहाने से कमजोरी छिपाना ।

लेना देना कुछ नहीं लडने को मौजूद-खाती झगडा करना ।

लेना एक न देना दोय फिर कुछ टपटा पहाँ ।

लोमडी के अगूर खट्टे-जब मिलना अुसम्भव होता है तब अपेक्षा की
जाती है ।

लोभी गुरू हालची चेली-दोनों एक से ।

वर मरें कै कन्या मरो, मेरी गोद का भाडा भरों- मुझे अपने मतः
लब से काम ।

घक्त पड़ै वाका, लोग गवे से कहें काका-दु स में सब करना पड़ता है ।
 वेस्या घरस घटावही, योगी घरस घटाव-स्वार्थ को फूँट बोलते हैं ।
 सतुप्रा बाँध के पीछे पडो कभी मत छोडो । दृढ़ सक्त्प बनो ।
 साची कहै खुश रहै सत्य में पीछे हर नश ।

सांचे का रग रूखा सच्चे मनुष्य म बनावटी चटक मटक नहीं लेती ।
 सुख कहना जन से, दु ख कहना मन से मन के दु ख को किंसा से
 मत कही ।

सोना धूल में भी चमकता है-गुणी बुरी दशा में भी उदा छिपता ।
 हनते को हनिये, पाप दोष नहीं गिनिये- मारने वाले को मारना ही
 चाहिये ।

हाथ कगन को आरसी क्या पत्यह को कोई क्या दिखाये ।
 हार माने भगडा डूटा स्पष्ट ।

हीरे की परप जोहरी जाने-गुणी ही गुण को समझता है ।
 या बला गले लग बिना बात आफत मोल रोना ।

अभी होठों का दूध भी नहीं छूटा है-अभी बच्चे ही ।
 अय जीने का कुड़ स्वाद नहीं-बस मरने पर ही दु खों से छूटेंगे ।
 अब के बचे तो सब घर रचे अब की आफत से बचना मुश्किल है ।
 अब की धार में चेडा पार है बस एक बार और हिम्मत करो ।

अपकी अवके साथ } समय देख कर काम होना चाहिए ।
 जपकी जवके साथ }

अब तो पत्थर के नीचे हाथ श्या है-अब तो उसके फारू में है ।
 अब तो रुपये की माया है रुपये से ही सब होता है ।

अच्छे भये अदल } इतना साया कि माण निकल गये ।
 प्राण गये निकल }

उधार देना लडाई मोल लेना है }
 उधार दीजै दुश्मन कीजे } उपार देने में नुकसान ही है
 उधार दिया गाँहक खोया } काम नहीं ।
 उधार पाये बैठे हैं-तैय्यार, बैठे हैं ।

उगले तो अधा, खाँय तो कोढ़ी दोनों तरह मुश्किल ।
 ऊजर हो घर सास का जो बैर करे हरबार

पीहर घर खुरम बसे जब लग है संसार

एक दम हजार उम्मेद एक बार में अनेक उम्मेद पूरी होना ।

एक दर घड़ हजार दर खुले तुम्हारे ही भरोसे नहीं थे ।

एक दिन का पाहुना दूसरे दिन अनखावना-मर्हमानी एक ही दिन है ।

एक ही राकड़ी से सब को हाँकना भले धुरे सब के साथ एकसा बँताय ।

करनी करे तो क्यों डरे और करके क्यों पछुताय } जो कुछ कसे
 योवै पैड बचूल के आम कहा से खाय

उस का साहस से फल भोगो ।

करनी पाक की, बात लास की- काम कुछ नहीं बातें बडी बडी ।

करनी न करतूत, चलियो मेरे पूत बिना बात हला मचाना ।

करनी न करतूत लडने को मौजूद-बिना बात मंगटा करना ।

फडुआ खभाव डूयती नाव कहुए स्वभाव से हर समय आफत ।

कलाल की वेटी डूबने चली, लोगों ने कहा मतवाली है-दूसरे के

कर्दा पर सुशी मनाना ।

काली चटा डरावनी और धौली घरसम द्वार दिखावटी और सग्य

में अन्तर है ।

कल का लीपा देउ बहाय

आज का लीपा देखो आय

} गुजर गया उसे जाने दो ।

जाय तो घी से, नहीं जाय जी से-घाय तो अच्छी चीज घाय नहीं मर जाय । कै हसा मोतो चुगै, कै लघन ही मरजाय । खाक डाले चांद नहीं छिपता अच्छे मनुष्यों की बुराई करने से बुराई नहीं होती ।

- खाली बनिया क्या करै इस कोठी के धान उस कोठी में धरे-काम करने वाला कमी बैठा नहीं रहता ।

खरबूजे को देख कर खरबूजा रग पकडता है देखा देखी शौक होना खाद्ये बकरी की तरह और सूसै लकड़ी की तरह घाता पीता लटता जाता है ।

गधा गिरे पहाड़ से और मुर्गी के दूटे कान अतम्भ्र बात ।

गधे का जीना थोड़े दिन भला-दुखित जीवन से मरा ही अच्छा ।

गौर का सिर पसेरी बराबर-दूसरे की परवाह नहीं ।

गगा किस की खुदाई है किसी एक का नहीं सबका समान अर्थकार ।

गाल वाला जीतै और माल वाला हारे-बहुत शोर मचाकर अपनी चला लगे ।

ऐसा काम हमेशा कर, जिसमें कभी न होवे डर } हर काम
ऐसी कहो न बात, कि सबका हिले हाथ }
समझ कर करो ।

ओझों के पास बैठ कर अपनी भी पति जाय नीच के साथ मत रहो ।

शौलाती का पानी मगरे पर नहीं चढ़ता- अतम्भ्र बात नहीं होती ।

अन्धे के आगे दीपक-मूर्ख समझ की बात नहीं मानता ।

अन्धे के आगे रोये, अपने दीदा खोये मूर्ख पर बात का असर नहीं होता ।

कर्महीन खेती करे बेल मरे कि सूखा परै-अमागे को जरूर

दुख होता है ।

कसाई का खूटा और खाली रहै } कोई न कोई आही मरता है ।

कहै तो माँ मारी जाय न कहै तो गाय को कुत्ता खाय-दोनों तरह
मुश्किल ।

कहे खेत की सुने खलियान की-अभापु-य काम करना ।

कहने से कुम्हार गधा पर नहीं चढ़ता मूर्ख कहने से नही मानता ।

काम प्यारा कि चाम ? सु-दरता नहीं, काम देखा जाता है ।

काम रहे तक काजी, न रहे तो पाजी-मतलब से आदर होता है ।

काल गया पर कहावत रह गई-चात बनी रहती है ।

किमी का मुंह चले किसी का हाथ-रोई गालो देता है कोई

मारता है ।

कफन सिर से बाँधे फिरता है-मरने से नहीं डरता ।

कुछ कमान भुके कुछ गोशा-कुछ कुछ दोनों अपना स्वार्थ छोड़े ।

दोनों नमू हों ।

काठ की तलवार क्या काम करेगी नफली चीज काम नहीं देती ।

काजी के घर के चूहे भी स्याने सब घर के चानाक है ।

खट्टा भावे मीठे को-स्वार्थ स ही एसा करता है ।

खर गुड एक ही भाव बिकाय-अन्धेर है ।

खाली चना बाजे घना-बनावदी अधिक चाते मारता है ।

खेले क्रूदे होय खराब पढे लिखै तो होय नयाय पढना अट्टा है ।

खून सिर पर चढ़ कर बोलता है दोष छिपता नहीं ।

खिलाये पिलाये का नाम नहीं, डाल देने का नाम-भलाई नहीं मानता ।

गँवार की अकल सिर में मूर्ख पिटने से मानता है ।

गाते २ कीरतनिया हो जाते हैं करते २ काम आजाता है ।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं समय को व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहिये ।

गरजता बादल बरसता नहीं } कहने वाला करता नहीं और करने

बरसता है सो गरजना नहीं } वाक्ता कहता नहीं ।

गगरी दाना सूत उताना शोका घोड़े विषय से इतरा जाता है ।

बाये कटक रहे अटक-कुछ करना चाहते थे और कुछ हुआ ।
गाडर राखी जनको वैठी चरे कपास-जाम को काम किया नुरुस्तान हुआ
गाडी का नाम उखली-जलटी बात करना ।

गों निकली आंख बदली-जब तक काम तब तक खातिर ।
गिरगिट के से रङ्ग बदलना-बात बात में रंग बदलना ।
घर में महुआ की रोटी यादर लम्बी धोती रोसी बघारता है ।
घडी भर की बेसरमी सध दिन का आराम निर्लज्ज को परवाह नहीं ।
घी घाना शकर से दुनिया ठगिये मकर से-मकर से काम निकाल
लेते हैं ।

घर की मूछे ही मूछे हैं-कोरी शेखी मारता है ।
घी के चिराग जलना-बड़े ठाठ घाट । बड़ी सुशी ।
घर बैठे गगा आई विना परिश्रम काम सफल हुआ ।
घर में सूत नहीं कोरी से लुठा लुठी विना कारण मगडा करना ।
घुल्लू भर पानी में डुब मर-बड़ी शर्म की बात है ।
चिकने मुह को सभी चूमते हैं-धनवाले से सब मित्रता करते हैं ।
चिकने घड़े पर पानी-वेशर्म को कोई बात नहीं लगती ।
चिडियों के शिकार में शेर का सामान-गरासी बात को बड़ी तैयारी ।
चोर चोरी से गया तो क्या हेरा फेरी से गया आदत का
प्रभाव रहता है ।

चोर का भाल चडाल खाय बुरी कमाई बुरी तरह खर्च होती है ।
चाकर है तो नाचा करे ना नाचे तो नाचाकर नौकर को चैन कदां
चौल के घोंसले में मास यह बिलकुल असम्भव ।
जीती मकली कोई नहीं खाती-जानकर भूठ नहीं धोखो जीतो ।
जिस-डाली पर घेडे उसी को काटे- जहा रहे उसी को हानि करे ।

जगल में मोर नाचा किसने देखा-कहीं और जगह उसने ऐसा काम
किया तो हम क्या जानें ।

जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि-कवि बहुत दूर की सोचता है ।
जगन शीरी मुक्त गौरी मीठा बोलना अच्छा है ।

जगन्नाथ का भात, जगत पन्नारे हाथ मतलब की बात को सब चाहते हैं ।

जाना कौडा ताना घोडा बखवान का ही अधिकार होता है ।

जागे सो पावे सोवे सो खोवे सावधानी से लाम होता है ।

जाके घर में गौसे गाय सो फ्या छालु पराई खाय सबकुछ होते
दुए दूसरों की आशा नहीं करना ।

जाके घर में भाई ताकी राम बनाई घर में माता होने से कुछ सटका
नहीं ।

जैसी जानी भावना तेसी ताकी सिद्धि-विचारों के अनुसार सिद्धि
होती है ।

जोगी फाके मीत कलत्र किसके भाई-पत्तकों में मोह माया नहीं ।

टका में टना छौर-ढका में ढका-लाभ में लाम हानि में हानि ।

घरवार तुम्हारा, फोठी हुठीजे से हाथ मत लगाना कूठी खुशामद
भरी बातें बनाना ।

गढ़ै कुम्हार भरे सखार फिसी के काम से कोई लाम उठाये ।

घर घर के जाले बुहारती फिरती है नहुत घर बदलते हैं वा सच की
सुशामद करते हैं ।

घर घरवाली से-स्त्री से ही घर का प्रबन्ध होता है ।

घर घर वही हिसाब है ऐसा ही सच घरों में है ।

घर ही में वैद मरे कैले प्रबन्ध घर के होने पर भी प्रबन्ध नहीं हुआ ।

घरी में थौलिया घरी में भूत-कमी कुछ स्वभाव कमी कुछ ।

छदाम में लडाई और पैसे में सुघड बडाई-योहा हों अधिक देने ।

म वाद वाद ।

छज्जे की बैठक धुरी और परछाही की छाह स्पष्ट
जिसने कोड़ा दिया वह घोडा भी देगा-इंगर पर भरोसा रखना ।

जब आवे वरसन चाव

पछवा गिने न पुरवा घायु-

स्पष्ट

जब आया देही का अन्त

जैसा गधा बेला सन्त

मृत्यु के सम्मुख सब बराबर

जब भये सौ तम भाग गया भौ जियादा कर्ज होने पर फिर डर नहीं
रहता- अथवा जब सगठन होगया डर नहीं रहता ।

जब भी तीन और अब भी तीन

जब पाये तब तीन ही तीन

हमेशा वही हालत ।

जब भूख लगी भड्डर को तब तदूर की सूझी

और जब पेट भरा तो दूर की सूझी

पेट भरने पर ही
सब बातें आती हैं ।

जब बिगडे जब सुघड नर क्या बिगडैगा कूढ

मट्टे का क्या बिगडे जब बिगडै जब दूध-

अच्छे ही के
बिगडने का डर
रहता है ।

भगडा भूँडा कब्जा सचा-अधिकार ही सब है ।

भरवेरी के जगल में बिल्ली और छोटी जगह में छोटे ही बच्चे ।

भार भी धनिये का धरो है धनिये ने सब धुरा मानते हैं ।

भटपट की घानी आधा तेल आधापानी जल्दी में काम अच्छा नहीं ।

भारि बिछाही कामली रहे निमाने सोइ-ये फिकरों की वक्ति ।

भौंपडी में रहे महलों के सपने देखे असम्भव कल्पना ।

भुके कोई उससे भुक जाय } जो अपनी इज्जत करे तुम उसकी
 रुके आपसे उससे रुक जाय } इज्जत करो ।

टका सा जवाब दे दिया साक़ कह दिया ।

टके का सारा खेल हे-रूपये की माया है ।

टके की मुर्गी है टके महसूल असल से अधिक व्यय ।

तकतिरिया तू आपनी पर तिरिया मत ताक } दूसरे की स्त्री को चुरी
 पर नारी के ताकते परै शीश में छाक । } निगाह से मत देखो ।

ताल बजा के मागे भीक } स्वार्थवश जोगों को रिक्त कर
 उसका जोग रहा क्या ठीक } काम लेना

कहावतों पर पद्य रचना ।

मुझ में चारि वेद की घातें, मन पर धन पर-तिय की घातें ।
 धनि बगुला भक्तनि की करनी " हाथ सुमिरनी बगल फतरनी ॥"
 आपन चरित सुधारत नाही, जग कहं उपदेशत न लजाहीं ।
 धिक पडित पन धिक बबुझाई, " काल्हि के जोगी मारै मारै ॥"
 नहिं सीसत सतगुन करि नेमा, निज हट तजि न प्रचारत प्रेमा ।
 तापर सुख चाहत अझानी, " किस विरते पर तता पानी । "
 करत नहीं भ्रम निज हित हेत, काल बर्म कह दूपन देत ।
 बुद्धि आससिन को गर्ह वेद, " नावि न जाने आगन देद ॥"
 निशि दिन करन परे अतिशय धन दूखै कर पट माथा ।
 तब कहु धन बल बुधि त्रिवेक विद्यादिक सावधि हाथा ॥
 एक साथ हरिलेत सु सन दिल्लरपन चुप्पा ।
 "होली जोरे परी परी नरिमान बुझावे चुप्पा ॥

बिन समरयि भूठी आशा है काहुहिं कर न पराव ।

“ इस दाता से सूम मला जो पल्दी देइ जगव ॥ ”

अधिर अपव्यय जनिंत जस अविसे नसाइहि साह ।

“ चारि दिना की चादती केरि अँपेरो पाव ॥ ”

होनहार बिन रोचै, करै काज मनमाना ।

तिहि कह पुरुष सयाने, निपटहि गनत अयाना ॥

कालिह अवलि दुग्ग सहि है आजु हसे हरखाई ।

“ बहारा की महतारा कब लागि कुशल मनाई ॥ ”

सदा न निमे कण्ट व्यवहार, अन्तु दिन यदपि लुभत ससार ।

भेद खुले निन्दा सय दाव, उतरा सहना मकरँद नाव ॥ ”

केवल धनमद के मतवार, बिन बिद्या बिन बुद्धि विचार ।

जिन सपने न प्रेम पथ लुभा, “ दिनडों के कब लडका हुआ ॥ ”

दुख दुख सय कह परत है, पौरुष तजहु न भीत ।

“ मन के द्वारे शर है मन के भीते भीत ”

जह राखन चाहहु व्यवहार, अधिक रसतु तह न्याय विचार ।

लेहु न भूति सकुच कर नाम “ सरी मजूरी चोखा काम ”

दान दीन कह दीजे, धनिहिं दिये धन लीजे ।

समुझहु तौ मति धीरा “ अँट के मुह में जीरा ”

धुन तजि अधुन बात की, चिन्ता तजि बुधराज ।

जियत हंसी जो जगत में, “ मरे मुक्ति केहि काज ”

स्वार थापनी रोह में परे परे सरि जाहिं ।

सिद्ध पराये देश में जह मारे तह पाहिं ॥

जो कुँड लपिन परै निज हानि, तौ समाज की तजहु न कानि ।

फ्यों बिन स्वारथ सहिये खिल्ली, पच कदै बिली तो बिली ”

जिहि सन करहु सनेह, तिहि की सन सहिलेहु ।

होइहि अमित अनंद राजहु निहचौ पदु ।

प्रेमी नहीं है तू, गई जु यह गति छू "मीठी मीठी गप्प, फडुवा र पू"
सुधिहि सुशीलहि सज्जनहि सोहत शस आचार ॥

"आखिन देखे चेतना मुख देने व्यवहार" ॥

आपर हरि कहें कतहु रिसाहि, ताहि निरापद थल कहु आहि ।

धुधि बल तासु सकत विधि घाटे "ऊठ चढ़े पर, फूँट फाटे"

निज करनीय काम जो धाय, ताहिन पर कर सौंपहु माय ।

अस कुमुदि लखि, कहिये कोन "बैल न कूदा कूदी गौन"

जह देराहु निज अधिक बिगार, लघु छाभहु कर तजहु बिचार ।

नहि यह बुद्धिमान फी धाह "दमड़ी की बुतनु टका हलाल"

जन समूह मह आरर लहें, साचहु परतिष्ठित सो अहै ॥

मृपा अहकृत रत बड फब हें, "अपने घर के सब राजा हैं"

बल धुधि त्रिया गुन अरु शान, सप पर हरि इच्छा बलवान ।

इहि मह नहि राशय राई है, "रनि प्राय की बनि आई है"

चाहिय सन्यासिहि सताषा, चतुर सो गृही जु सचै कोषी

यथा लाभ सतुष्ट अयाना—"गगरी दाना सूद वताना ।"

अवसर पर कीन्हें नहीं, यदि प्रयत्न हित हेत ।

"फिरि पड़िताये दया दृशा जब चिहिया धुग गई नेत"

अहो मित्र धन सचय करो, राज गुन गन छुपर पर धरो ।

निहि वित्त बुद्धि विकल सब फाल, "सौ चंडाल एफ बंगाल ॥"

प्रिये पतिव्रत पथ दड गहह, जेहि मठके ससुरे सुख लहह ।

कुलटा निदित सबै दही है, गत तये कुज हाथ नहीं है ॥"

इट निद्व में, परै जु विघा, तवट्ट मन न करो उद्विग्न ।

होइहि अवसि अट्ट अम करो, "सतुभा नाथन पाधे परौ ।"

रचना-प्रबोध।

शिक्षकों के लिये

रचना (Composition) अर्थात् वाक्य-रचना तथा
निबंध लेखनादि—

पढाने के लिये सिर्फ यही एक पुस्तक युक्त प्रदेशीय टेक्स्ट-
बुक कमेटी ने न० जी० १२१४ ता० १६-७-१८ के अनुसार
मजूर की है।

श्रीर हिन्दी-माझिय सम्मेलन, विभाग, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, पंजाब की
टेक्स्टबुक कमेटियों से भी स्वीकृत है।

इसी से जान सकते हैं पुस्तक कितनी उपादेय है।

प्रबोध क पहिले अध्याय में—शब्दभेद, शब्दार्थ, अर्थ वेपथ्य, अर्थ
भिन्नता, शब्द प्रयोग का वर्णन है।

दूसरे में—वाक्य आकांक्षा, योग्यता, आसक्ति वाक्यांश वाक्य-
सङ्घ, वाक्य भेद सरल, जटिल, योगिक वाक्य-योजना, पद योजना, वाक्यों
का फोलाव, पदपरिचय, पदों की भिन्न र अन्वया, वाक्य-विश्लेषण, भाषा,
कहावत, मुहाविरा, रस, गुण दोष आदि रचना सम्बन्धी बातों का वर्णन है।

तीसरे में—पहले रचना सम्बन्धी प्रारंभिक बातें अर्थात् रचना का
उद्देश्य, प्रारंभिक अभ्यास, सामग्री, प्रबंध भेद, वर्णक, कथात्मक, आलो-
चनात्मक और व्याख्यात्मक ढांचा, समाप्ति विराम-चिह्न, हर
प्रकार क प्रश्नों का विषय विभाग करना, क्रम देना, तथा प्रभावशाली
और संक्षिप्त भाषा में वाक्य रचना करने का नियम दिखाया है।

और क्रम और विभाग सहित देशी कारोंगरी, और इसकी उन्नति के
उपाय आदि करने की कोई ५० विषयों पर प्रबंध दिये हैं। (१० संख्या १६०
मूज्य ॥)

इन पुस्तक से यही नहीं कि पुस्तक में दिये हुए विषयों पर ही देख जिन
सक वरन हर एक नये विषय पर क्रम से विभाग कर के लेख लिखना आता है

